वैज्ञानिक दृष्टिकोण

(i) व्यवस्था सिद्धान्त

(ii) निर्णय निर्माण सिद्धान्त

(iii) खेल सिद्धान्त

विज्ञान बनाम परम्परावादी =

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में वाद-विवाद 1960 के दशक में दूसरा महा विवाद का आरम्भ ऊपर का 1966 में आरम्भ. हैडली बुल के एक लेख के द्वारा जोर दी इन्होंने परम्परावाद का समर्थन तथा विज्ञानवाद का खण्डन किया। प्रतिउत्तर में कैप्लान ने परम्परावादियों पर जवाबी हमला किया तथा वैज्ञानिक पद्धति की उपयोगिता का औचित्य सिद्ध मार्टन कैप्लान ने अपने लेख में इसे एक नयी महान बहस का नाम दिया।

✓ डेविड सिंगर ने विज्ञानवाद और परम्परावाद को दो भिन्न बौद्धिक शैलियाँ कहा है। ~~अंतर्रा~~

= अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रमुख विचारक =

E. H. कार

एल्फ्रेड जिमर्न, जॉर्ज श्वार्जनबर्गर, मार्गेन्थाउ, रेमण्ड ऐरन, निकोलस स्पाइकमैन, नेबूर, हेडली बुल, केनान

अनुसंधान शैशव अवस्था में है। जब यह प्रौढ़ हो जायेगा तब व्यापक सिद्धान्त बनाया जा सकता है Hedley Bull के अनुसार ऐसा कभी-2 सम्भव नहीं है क्योंकि यह अध्ययन मान्यताओं पर बहुत अधिक बल देते हैं। यह इतने अधिक चरों को समाहित करते हैं कि एक समान सिद्धान्त निर्माण करना सम्भव नहीं है।

वैज्ञानिक लोग प्रतिमान निर्माण का कार्य करते हैं यह खतरनाक प्रवृत्ति है क्योंकि इससे वास्तविकता से दूर चले जाते हैं। विषय क्षेत्र को समझाने में इन प्रतिमानों का कोई खास योगदान नहीं होता है। कभी-2 प्रतिमान को वास्तविक समझने की भूल हो जाती है।

(5) ये वैज्ञानिक प्रविधियों को ही ध्येय बना लेते हैं परिकल्पना (परीक्षण) को इतना आगे ले जाते हैं कि केवल तथ्यात्मक अध्ययन को ही विषय क्षेत्र मानते हैं जिन चीजों का तथ्यात्मक अध्ययन सम्भव नहीं है उन्हें छोड़ देते हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के सम्पूर्ण क्षेत्र को अपने दायरे में नहीं ला पाते।

(6) ये इतिहास और दर्शन से सम्बन्ध विच्छेद की बात करते जो कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने के लिए महत्वपूर्ण है दर्शन के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है इतिहास से देखा जा सकता है क्या इतिहास कहीं ही इनकी पुनरावृत्तियाँ न हों।

वैज्ञानिक पद्धति समर्थक :- मॉर्गेन्थाउ, कार्ल ड्यूश, मैकलीलन, चार्ल्स मैकक्लेलन, स्नाइडर, रोजनाऊ, इत्यादि

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में वैज्ञानिक पद्धति का आरम्भ बहुत देर से हुआ आरम्भ के पश्चात इसको बहुत अधिक बल दिया जाने लगा जिसका परम्परावादियों ने विरोध किया बुल ने सात आधारों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आलोचना किया है।

(1) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का विषय स्वरूप ऐसा है कि इसका वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं है अध्ययन कर्ता को वास्तव मूल्यांकन प्रश्नों से पड़ता है जैसे, शांति या युद्ध, बल प्रयोग का औचित्य, नैतिकताएं इन प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक विधि से नहीं दिया जा सकता वैज्ञानिकों ने इन प्रश्नों का उत्तर देने की जगह अध्ययन प्रणाली के परिष्करण में ज्यादा समय व्यर्थ किया है अर्थात विषय वस्तु से अधिक अध्ययन पद्धति पर बल दिया है।

वैज्ञानिकों ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के बुनियादी प्रश्नों को ध्यान न देकर तुच्छ बातों पर अधिक समय लगाया यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत के विकास में इनका कोई योगदान नहीं है।

वैज्ञानिक पद्धति वाले मानते हैं कि परिणाम के वैज्ञानिक

अनुसंधान शैशव अवस्था में है। जब यह प्रौढ़ हो जाएगा [illegible] सामान्य सिद्धान्त बनाया जा सकता है Hedley Bull के अनुसार ऐसा कभी-2 सम्भव नहीं है क्योंकि यह [illegible] राजनीति पर बहुत अधिक बल देते हैं। यह इतने अ[illegible] चरों को संग्रहित करते हैं कि एक समान सिद्धान्त [illegible] का पता सम्भव नहीं है।

वैज्ञानिक लोग प्रतिमान निर्माण का कार्य करते हैं यह स्वा[illegible] प्रवृत्ति है क्योंकि इससे वास्तविकता से दूर चले जाते हैं। विषय क्षेत्र को समझने में इन प्रतिमानों का कोई खास योगदान नहीं होता है। कभी-2 प्रतिमानों को ही वास्तविक समझने की भूल हो जाती है।

(5) ये वैज्ञानिक प्रक्रिया को ही ध्येय बना लेते हैं। परिशुद्ध[illegible] परिमापन को इतना आगे ले जाते हैं कि केवल [illegible] अध्ययन को ही विषय क्षेत्र मानते हैं जिससे भी [illegible] तार्किक अध्ययन सम्भव नहीं है उसे छोड़ देते इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के [illegible] क्षेत्र को अपने दायरे में नहीं ला पाते।

(6) ये इतिहास और दर्शन से सम्बन्ध विच्छेद की बात [illegible] दोनों ही अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने के लिए मह[illegible] है दर्शन के आधार पर मानक-मूल्यात्मक अध्ययन किया जा सकता है इतिहास में देखा जा सकता है क्या गल[illegible] हुई ही उनकी पुनरावृत्ति न हो।

Scanned with CamScanner

मार्टन कैप्लान का ~~[struck through]~~ प्रत्यक्षवाद - वैज्ञानिक वाद

का समर्थन करता है :-

परम्परागत वादीयों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध मानवीय अभिप्रेरकों और मूल्यों से है जिनका सत्यापन नहीं किया जा सकता अतः अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने के लिए अन्तः विवेक का प्रयोग का उपयोग करना होगा न राजनीतिक पद्धति का।

कैप्लान के अनुसार हम व्यवहार का अध्ययन करते व्यवहार स्वयं अभिप्रेरक और मूल्यों से बनता है अतः दोनों में कोई खास अन्तर नहीं है। वैज्ञानिक पद्धति अधिक व्यवहारिक व्याख्या करती है जैसे की राजनीतिक व्यवहार अत्यन्त अव्यवस्थित अभिप्रेरकों से सम्बन्धित नहीं है।

परम्परावादी मानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में परिकल्पना और परिमापन नहीं किया जा सकता यह तो किसी भी विज्ञान के साथ लागू होगा। यह विज्ञान की अवस्था पर निर्भर है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सिद्धान्त अभी बहुत आरम्भिक स्तर पर है आगे चलकर ऐसा विकास हो सकता है परिकल्पना और परिमापन किया जा सके।

(3) कैप्लान के अनुसार परम्परावादी (वैज्ञानिक पर आरोप लगाया है) प्रतिमानों को वैज्ञानिक और वास्तविकता समझते हैं। यह भूल परम्परावादीयों ने अधिक किया जैसे, मार्गेन्थाउ ने अंतर्राष्ट्रीय

सामाजिक को शक्तियों के रूप में परिभाषित किया है औपचारिक कारणों को जान बूझ कर ऐसा कर दिया है। यह आरोप भी गलत है कि वैज्ञानिक पद्धति को महत्व नहीं देते हैं। व्यवस्था सिद्धान्त में बहुत व्यापक पद्धति का उपयोग किया गया है उनके परम्परावादियों ने पद्धति के स्वरूप को नहीं समझा है और अनुभवजन्य रहित विवेक को पद्धति माना है।

व्यवहारवाद ने वैज्ञानिक पद्धति की विशेषताओं को लिया है जैसे वैज्ञानिक विश्लेषण, अन्त: शास्त्रीय विश्लेषण, मात्रात्मक विश्लेषण के माध्यम से स्पष्टता को को दूर करता है।

निष्कर्ष :-

विज्ञानवाद और परम्परावाद में वास्तव में कोई समानता नहीं है। इनमें वैज्ञानिक सिद्धान्तवादों में सहिष्णुता नहीं है। वैज्ञानिकों ने स्पष्टता की जगह अस्पष्टता कायम कर दिया रूढ़ और विशिष्ट शब्दावली का उपयोग किया है अलग-अलग सिद्धान्तवादों ने एक ही शब्द को अलग-अलग ढंग से उपयोग किया है वैज्ञानिक सिद्धान्त के नाम पर केवल आंशिक सिद्धान्त ही बन सके हैं। वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं आ पाया है।

मार्गेन्थाऊ के अनुसार वो अनुसार वैज्ञानिकों की कोई योगदान नहीं है 70 और 80 के दशक से एक नया दृष्टिकोण उभर के सामने आया है जिसे नवपरम्परावाद कहते हैं। डेविड लिंडसे, डेविड आइजमान, मैकाइवर, लियो स्ट्रॉस, परम्परावाद और व्यवहारवाद

मनुष्य नैतिक निर्णय की बात करता है।